ISSN-0975-2560

पारमिता

(वर्ष 9 अंक 9)

2019

दर्शन परिषद् (मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़)
वरन् वै मधु विन्दति
स्थापना 1994

सम्पादक
जय प्रकाश शाक्य

दर्शन परिषद्
(मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़)
पंजीयन क्रमांक 04/14/01/08825/06
email:mpcgdarshanparishad@gmail.com

अनुशासन : एक दार्शनिक विश्लेषण

प्रो० ए. पी. दुबे
विभागाध्यक्ष, दर्शन-विभाग,
पूर्व प्राक्टर,
डॉ० हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,
सागर (म.प्र.)

यदि हम दर्शन की दृष्टि से विचार करें तो अनुशासन एक नैतिक मूल्य है जो मानव के सामाजिक, व्यक्तिगत, आध्यात्मिक पक्ष से सम्बन्ध रखता है। जिस प्रकार कर्म सिद्धान्त ऋत् से संबंधित है वैसे ही अनुशासन को मानव जीवन में प्रकृति के अनुशासन के आदर्श उदाहरण को सामने रखकर धारित किया गया है। भारतीय सन्दर्भ में देखा जावे तो आश्रम व्यवस्थाओं विशेषकर ब्रह्मचर्य में अनुशासन का महत्त्व है। महाभारत का अनुशासन पर्व और बौद्धों का पंचशील अनुशासन से सम्बन्धित है। योग का तो प्रारम्भ ही **'अथ योगानुशासनम्'** से होता है, जो मोक्ष के लिए आवश्यक है। स्वामी विवेकानन्द की वाणी हो अथवा गांधीजी का स्वराज्य सभी अनुशासन की महत्ता को स्वीकार करते हैं। वैसे तो अनुशासन प्रत्येक आयु वर्ग के व्यक्ति के जीवन के लिए आवश्यक है किन्तु यहाँ हमारा अभिधेय युवा वर्ग में वर्तमान परिस्थितियों में अनुशासन को लेकर है। योग में अनुशासन को शिष्ट का शासन निरूपित किया गया है।[1] पतंजलि के अष्टांग योग – यम और नियम, से प्रारम्भ होते हैं जिसके लिए मानसिक संयम और अनुशासन आवश्यक है। उन्हीं के बाद आसन, प्राणायाम और प्रत्याहार नामक तीसरे, चौथे और पाँचवें चरण आते हैं। चित्त, असम्प्रज्ञात समाधि आदि अतीन्द्रिय पदार्थों का ज्ञान हमें अनुशासन द्वारा सिद्ध होता है। अनुशासन प्रारम्भ में बलपूर्वक ही करना पड़ता है क्योंकि यह स्वेच्छित नहीं है किन्तु बाद में सहज हो जाता है।

यद्यपि भयवश स्वीकार किया गया अनुशासन अस्थायी होता है, क्योंकि वह भय समाप्त होते ही नष्ट हो जाता है।[2] इसका प्रमाण आपातकाल की शासन व्यवस्था है। स्थायी अनुशासन तो वह है जो भीतर से उत्पन्न होता है। अनुशासन प्रारम्भ में तो कठोर लगता है किन्तु उसका फल महान् बनाने वाला है। अनुशासन की विडम्बना यह है कि हम स्वयं अनुशासित रहना नहीं चाहते किन्तु दूसरों से अपेक्षा करते हैं कि वे अनुशासित रहें।[3] प्राचीन काल में गुरूकुल में ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए ऋषियों, गुरुओं द्वारा शिष्यों की शिक्षा-दीक्षा होती थी जिसमें पूर्ण अनुशासित जिम्मेदार नागरिक तैयार होते थे। इस प्रसंग में विश्वामित्र का उदाहरण देना समीचीन होगा। विश्वामित्र दशरथ से आग्रह कर राम को

साथ ले जाते हैं और कहते हैं 'दशरथ तुम मुझे राम दे दो। मैं तुम्हारा आर्यावर्त बचा लूँगा' यह वाक्य ऋषि की मंत्र ऋचा बन जाता है।[4] आश्चर्यचकित दशरथ जब इस बात को समझ नहीं पाते। तब वे अपना मन्तव्य प्रकट करते हुए कहते हैं –'तरुणाई में प्रवेश करने वाले चारों राजकुमारों को शस्त्रों, शास्त्रों की अनुशासित दीक्षा दूँगा। उन्हें आत्मबल व बाहुबल की चेतना दूँगा ताकि वे आसन्न विपदा, दक्षिण से आ रही रक्ष संस्कृति का अपने विवेक और पराक्रम से सामना कर सकें। यह दीक्षा अनुशासन से ही सम्भव है और इस प्रकार गुरूकुल परम्परा एक जिम्मेदार नागरिक और आदर्श शासक तैयार करता था। यह विलक्षण निष्पत्ति है, इस प्रसंग की, कि तपोवन का ऋषि उसमें इतना सामर्थ्य और विवेक क्षमता थी कि वह 'शास्त्रों के साथ 'शस्त्रों का प्रशिक्षण देकर आने वाली पीढ़ी को पारंगत कर सकता है। यही हमारी सांस्कृतिक परम्परा है। उसमें व्यवधान या व्यतिक्रम (अनुशासनहीनता) विघटन का कारण बनता है।[5] मोटे तौर पर मानव जीवन को तीन कालों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम–बाल्यकाल या अर्जन और प्रशिक्षण काल, द्वितीय–यौवन या उपभोग अथवा संग्रहकाल, तृतीय–साधना और साक्षात्कार काल।[6] प्रथम बाल्यकाल जहाँ स्नेह और सहयोग पर आधारित है वहीं द्वितीयकाल साहस और सहकार पर आधारित है। यही से अनुशासन का संचार और अर्जन होता है जो तीसरे काल तक चलता है। अनुशासन का यह संग्रहण मनुष्य विशेषतः विद्यार्थियों के लिए मनोवांछित सफलता की कुंजी है।

वर्तमान में यह दृष्टिगोचर है कि विद्यार्थी व युवा अपने जीवन के आधारभूत सिद्धान्त अनुशासन से दूर होते जा रहे हैं जिससे अपसंस्कृति का वातावरण निर्मित हो गया है। इसका एक बड़ा कारण संचार माध्यम हैं, विशेषतः इलेक्ट्रानिक मीडिया अधिक उत्तरदायी है जिसने हमारे मूल्य, मर्यादा और नैतिकता के प्रतिमानों को ध्वस्त कर दिया है। स्वतन्त्रता का बोध पूरी तरह विकसित नहीं हो पाया और हमारी पीढ़ी उत्तरोत्तर स्वच्छन्द होती चली गई।[7] सिनेमा, विज्ञापन, चमकदार माडलिंग, नशीली दवाओं के बाजार आदि ने नवजवानों के समक्ष एक नया संसार खोल दिया। यह समस्या केवल भारत की नहीं अपितु कमोवेश सम्पूर्ण विश्व इससे प्रभावित है। कुछ स्वार्थी तत्त्व इस कार्य को प्रोत्साहित कर रहे हैं और रातों-रात धन व यश अर्जित करने की दौड़ में, 'शार्टकट' संस्कृति में शामिल हो गए हैं। इस समस्या के अनेक कारण हैं, कतिपय महत्त्वपूर्ण कारणों पर चर्चा हम यहाँ करना चाहेंगे। इन कारणों में शिक्षा की अहम् भूमिका परिलक्षित होती है।